

विचार बिन्दु

करता सा सो क्यों किया, अब करि क्यों पछताए
बोवे पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाए। –कबीर

व्याधिक्षमत्व क्या है?

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। भगवान आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया:— भगवन्! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है। आत्रेय का उत्तर था:— अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे— ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुँचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुँचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्ष्णों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियों भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती है।

अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि क्यों कुछ लोग प्रायः कभी बीमार नहीं पड़ते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें जीवन के अंतिम दिन तक लगभग सभी क्लिनिकल पैरामीटर सामान्य बने रहते हैं। जैसा कि आपने पूर्व में पढ़ा, वस्तुतः इस चमत्कार के पीछे कोई चमत्कार नहीं बल्कि व्याधिक्षमत्व है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक व्याधिक्षमत्व सिद्धांत-प्रिन्सिपल ऑफ़ इम्यूनिटी के जनक माने जाते हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मजबूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरूप व मजबूत इन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, व्यास, टंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बूढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चय वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18): सममांसप्रमाणस्तुसमसंहननोनरः। दुर्बेन्द्रियोविकाराणां न बलेनाभिपृथते॥ क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्तासमजरः सममांसचयोमतः॥

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र

मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्ष्णों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है।

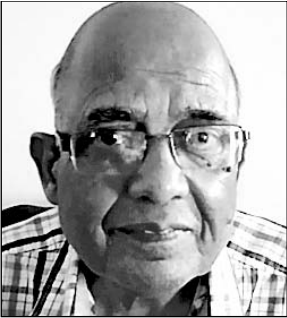
व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधि क्षमत्व है। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी केबल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.3.6): त्रिविधंबलमिति— सहज, कालज, युक्तिकृत च। सहजंयच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजंयवः कृतं च, युक्तिकृतंपुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्॥ बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परिरेजस्तत्स्वत्वोजस्तदेव बलमिदमुच्यते स्वशास्त्र सिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117): प्राकृतस्त्वबलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवौजःस्पृतःकाये स च पाप्मोपदिश्यते॥ यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्य बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अथर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को देशविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदाहरण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में सम प्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सत्त्व्य, सत्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय है। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से साक्षात् जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मजबूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मजबूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व का रोगों से बचाव और उपचार में अनिवार्यता को देखते हुये यह प्रश्न स्वाभाविक है कि व्याधिक्षमत्व को बढ़ाने के लिये कौन सी युक्ति का क्रियाकवचन किया जाये? व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मल क्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें (1) आहार या खानपान, (2) विहाय या जीवनशैली, (3) स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, (4) सद्वृत्त या व्यक्तिगत सदाचरण, (5) पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, (6) रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः (7) औषधि या चिकित्सा शामिल है।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)



डॉ. जे के गर्ग

अनेकों मान्यताओं के अनुसार काशी के एक जुल्लाह नीरू अपनी बीबी नीमा का गोना करारक लहरता तालाब से होते हुए घर आ रहे थे तो उसकी बीबी नीमा को प्यास लगने लगी, तब दोनों तालाब पर पानी पीने लगे। तब उन्होंने एक टोकरी में फूल-पते की शय्या पर एक नवजात शिशु को देखा। नीरू-नीमा उस शिशु को उठाकर अपने घर ले आये और उसका लालन-पालन करने लग गये । वही बालक कबीर के नाम से प्रख्यात हुआ । इस प्रकार कबीर साहेब का जन्म-स्थान काशी है । कुछ लोगों का विचार है कि नीरू-नीमा को अपने गौना के समय नहीं, किन्तु उसके कई वर्षों के बाद लहरताया पर बालक को देखा था । सवाल उत्पन्न होता है कि शिशु लहरताया तालाब पर कहाँ से आया ? इस बारे में मान्यता है कि एक विधवा या कुमारी ब्राह्मणी की कोख से यह शिशु पैदा हुआ था, वो समाज से अपमानित होने के भय से नवजात बालक को लहरताया तालाब पर छोड़ गयी थी। इस तरह से कबीर जन्म से हिन्दू थे किन्तु उनका लालन-पालन मुस्लिम

बीकानेर, (निसं)। मौसम धीरे धीरे फिर से गर्मी की ओर बढ़ने लगा है। बेक टू बेक दो पश्चिमी विक्षोभ के चलते बीकानेर में तापमान में दस से बारह डिग्री सेल्सियस की कमी आई, जो अब धीरे धीरे बढ़ने लगी है। इसके बाद भी अब तक तापमान सामान्य से 7.7 डिग्री सेल्सियस कम है। सामान्यतया इन दिनों में बीकानेर में पारा 46 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहता है लेकिन अभी 39 डिग्री तक पहुँचा है। कमीवेश ऐसी ही स्थित रात के तापमान की है, जो सामान्य

बीकानेर, (निसं)। मौसम धीरे धीरे फिर से गर्मी की ओर बढ़ने लगा है। बेक टू बेक दो पश्चिमी विक्षोभ के चलते बीकानेर में तापमान में दस से बारह डिग्री सेल्सियस की कमी आई, जो अब धीरे धीरे बढ़ने लगी है। इसके बाद भी अब तक तापमान सामान्य से 7.7 डिग्री सेल्सियस कम है। सामान्यतया इन दिनों में बीकानेर में पारा 46 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहता है लेकिन अभी 39 डिग्री तक पहुँचा है। कमीवेश ऐसी ही स्थित रात के तापमान की है, जो सामान्य

भीलवाड़ा, (निसं)। चिकित्सा विभाग के तत्वावधान में विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर शनिवार को सरकारी कार्मियों व पर्यावरण संघर्ष समिति के पदाधिकारियों व आमजन की सहभागिता से भीलवाड़ा शहर के पुलिस कंट्रोल रूम परिसर से साइकिल रैली का आयोजन कर आमजन को पर्यावरण बचाने व स्वस्थ रहने के लिए साइकिल चलाने का संदेश प्रसारित किया गया। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण व अच्छे स्वास्थ्य की जागरूकता से जुड़े स्लोगन व नारों के माध्यम से जागरूकता फैलाकर साइकिल चलाने के लिए प्रेरित किया गया।

साइकिल रैली को अति. जिला कलक्टर (शहर) ब्रह्मलाल जाट, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मुस्ताक खान, डिप्टी सीएण्एचओ डॉ. धनश्याम चावला, अति. सीएमएचओ डॉ. सीपी गोस्वामी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान क्लब प्रभारी अरुण संतोष मुछाल तथा साइकिल

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, रविवार, विक्रम संवत 2080, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:23 तक, सिद्ध योग दिन 11:58 तक, बव करण प्रातः 9:12 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:23 से धनु राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरु-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सार्वर्थ सिद्धि योग रात्रि 3:23 से सूर्योदय तक है।
ज्वालामुखी योग रात्रि 3:23 से आरम्भ होगा। आज सत्यव्रत, ज्येष्ठी पूर्णिमा, ज्येष्ठ श्रुति पूर्णिमा पर्व है। आज देव स्नान पूर्णिमा है। आज संत कबीर जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:14 से 9:01 तक, लाभ-अमृत 9:01 से 12:26 तक, शुभ 2:07 से 3:49 तक।
राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:13

संपादकीय

भक्ति काल के सर्वश्रेष्ठ समाज सुधारक सर्वधर्म सुखाय के जनक महात्मा संत कबीर

परिवार के अंदर हुआ था ।

बालक कबीर की शादी बचपन में ही कर दी थी । कबीर दास जी की पत्नी का नाम लोथा था कबीर दास जी के एक पुत्र और एक पुत्री भी थी पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली था यह उनकी रचनाओं द्वारा प्रमाणित होता है।

मान्यताओं के अनुसार सदरुह कबीर का जन्म विक्रमी संवत 1456 की जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को काशी में हुआ था । कबीर पंच तत्वों में विलीन माघ शुक्ल एकादशी संवत् 1575 को मगहर में हुए थे। कबीर साहेब ने 120 वर्ष तक सांप्रदायिक सदभाव का संदेश दिया था । समस्त देश के अंदर 4 जून 2023 को संत कव्वर का जन्मोत्सव हर्ष उल्लास के साथ मनाया जायगा ।

कबीर दास जी काशी के गंगा घाट के किनारे रहा करते थे ऐसा कहा जाता है कि कबीर दास जी गंगा घाट के किनारे बैठे हुए थे तभी वहां पर भस्मुति काल के

गुरुमुख गुरु रामानंद जी न्गान कर रहे थे रामानंद की नजर कबीर दास पर पड़ी जिसके कारण कबीर के मुंह से राम शब्द निकल पड़ा, इसी राम शब्द को सुनकर गुरु रामानंद अत्यधिक प्रसन्न हुए तभी से रामानंद ने कबीर दास जी को अपना शिष्य बना लिया। उन्हें शिक्षा दी इस प्रकार कबीर दास जी के गुरु श्री रामानंद जी थे गुरु रामानंद जी ने कबीर दास को ज्ञान और भक्ति के दर्शन कराए तथा उनके ज्ञान को विकसित करने में गुरु रामानंद जी ने भूमिका निभाई। कबीर दास जी संत के साथ-साथ दार्शनिक कवि और समाज सुधारक भी थे । कबीर दास जी की मुख्य रचनाएं (1) कबीर की साखियां (2)

यह माया बड़ौ पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विछुड़ कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती

सबद (3) रमणी है । कबीर दास जी की सर्वोत्तम रचनाओं में उन पुस्तक सबद भी है है इस रचना में कबीर दास जी ने प्रेम और अंतरंग साधना का वर्णन खूबसूरती से किया गया है। संत कबीर की साखियां में ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है और उसके सिद्धांतों का वर्णन इस रचना में बखूबी से किया गया है। कबीर दास जी ने अपना सारा जीवन काशी में रहकर ही लोगों के कल्याण के लिए और सामाजिक बुराइयों और कुरतियों का अंत करने के लिए लगा दिया मृत्यु के समय कबीरदास जी मगहर चले गए जो कि उत्तर प्रदेश में पड़ता है ऐसा कहा जाता है कि उस समय मगहर में रहने वाले लोगों को नर्क की प्राप्ति होती थी कबीर दास जी ने इसी अंधविश्वास को झूठा साबित करने के लिए मगहर चले गए कबीर दास जी की मृत्यु के समय मगहर चले गए ताकि समाज में फैली हुई अंधविश्वास को जड़ से रोका जा सके।

कबीर की निष्पक्षता, दो टूक कहने का ढंग और बड़े-बड़े रहस्यात्मक गुत्थियों को सरल-सहज उपमाओं के द्वारा व्यक्त करने की शैली को वजह कबीर को भक्ति काल के संतों में प्रमुख संत माना गया है। कबीर मानत थे कि मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन-संपत्ति, मेरी शारीरिक-मानसिक शक्ति, सब कुछ तुम्हारी ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है तो उसके प्रति ममला कैसे? तेरी दी हुई वस्तुओं को तुम्हें समर्पित करते हुए मेरी क्या हानि है? इसमें मेरा अपना लगता ही क्या है?

यह माया बड़ौ पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विछुड़ कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती

है और राम-नाम का जप नहीं करने देती। अतः संत कहते है की कबीरमाया पापणी, हरि पूँ करे हराम। मुख कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम।। यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम-नाम का जप नहीं करने देती। बेठा पैदा होने पर है प्राणी थाली बजाकर इतनी प्रसन्नता क्यों प्रकट करते हो? जीव तो चौरासी लाख योनियों में वैसे ही आता-जाता रहता है जैसे जल से युक्त नाले में कीड़े आते-जाते रहते है। कबीर ने बताया कि यह तुम्हारी मूर्खता है कि तुम पहले जाति पूछते हो, फिर संदेश का पानी पीते हो। तुम जिस मिट्टी के घर में बैठे हो उसमें सारी सृष्टि समाई हुई है।

छप्पन करोड़ यादव और अठासी हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है। इस नदी के पानी में सारा नर्क (गंदी चीजें) बहकर आता है और जानवर और ईंसन सब इसमें सड़ते है। जब हड्डी और गुदा गल जाता है तब दूध बनता है। इस दूध को लेकर पाँड़े भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआछूत मिट्टी में मगाने है। है पाँड़े, वेद और कुरान सबको छोड़ दो। ये सब दिल का धोखा है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते है। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मपंथ, ईश्वर-अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े

हजार मुनि यहाँ डूब गए और क्रदम-क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। अरे पाँड़े, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो। इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है।